दीनदयालजी में प्रखर प्रतिभा थी। वे जिस क्षेत्र में गये वहां समर्पण भाव से कार्य किया। संघ की शाखाओं में वे प्रेरक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते थे। एक बार वे शाखा में कबड्डी, खोखो आदि प्रतियोगिताएं देख रहे थे। उन्होंने विनोदपूर्वक एक टीम से कहा–